माउस की कहानी

डगलस एंजेलबर्ट ने 1960 में जब कंप्यूटर माउस का आविष्कार किया था, तब उन्होंने उसे लकड़ी से बनाया था। एंजेलबर्ट का पिछले दिनों निधन हो गया, लेकिन, अब तक के सफर में माउस ने तमाम पड़ाव पार कर लिए हैं। यह अब वायरलेस भी हो गया है। आइए जानें कंप्यूटर माउस के कुछ दिलचस्प तथ्य..

-जिस समय 1960 में एंजेलबर्ट ने माउस का अविष्कार किया था, उस समय बड़े-बड़े कमरों के बराबर कंप्यूटर होते थे, इन मशीनों में पंच कार्ड द्वारा डाटा भरे जाते थे।

-1963 में बिल इंग्लिश ने डगलस के स्केचेज के आधार पर लकड़ी का माउस बनाया, जिसे चलाने के लिए दो पहियों का इस्तेमाल किया। डगलस ने 1968 में सैन फ्रांसिस्को के कंप्यूटर कॉन्फ्रेंस में माउस का पहला डिमॉन्स्ट्रेशन दिया।

-जैक हॉली और बिल इंग्लिश डगलस के इस काम से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने उसी के आधार पर पहला डिजिटल माउस 1972 में जीरॉक्स पार्क डिजाइन किया। इस माउस में एनलॉग से डिजिटल में कन्वर्ट करने की जरूरत नहीं होती थी, यह सीधे इन्फॉर्मेशन कंप्यूटर को भेजता था। इसी माउस में पहली बार मेटल की माउस बॉल लगाई गई।

-1970 में डगलस एंजेलबर्ट ने माउस का पेटेंट कराया था, उनके नाम माउस के अलावा 45 और आविष्कारों का पेटेंट है।

-शुरुआत में माउस को बग नाम से जाना जाता था, लेकिन इसे माउस इसलिए कहा गया, क्योंकि स्टैंफोर्ड रिसर्च इंस्टीट्यूट में विकसित किए गए माउस का आकार बिल्कुल चूहे की तरह था।

-डगलस के प्रदर्शन के करीब बीस साल बाद 1981 में माउस इस्तेमाल के लिए बाजार में आया, जिसमें बॉल और दो बटन होते थे। जेरोक्स स्टार 8010 पर्सनल कंप्यूटर के साथ इसे बेचा गया। उस समय इस कंप्यूटर की कीमत थी 16000 डॉलर।

-माउस की बॉल का अविष्कार बिल इंग्लिश ने 1970 में किया था।

-माइक्रोसॉफ्ट ने पहली बार 1983 में माउस की बिक्री शुरू की।

-1991 में लॉजिटेक ने दुनिया का पहला वायरलेस माउस पेश किया, जिसमें रेडियो फ्रीक्वेंसी ट्रांसमिशन का इस्तेमाल किया गया।

- 2004 में लॉजिटेक कंपनी ने पहला लेजर माउस बाजार में उतारा था। इस माउस की स्पीड ऑप्टिकल माउस से 20 गुना ज्यादा थी।

-माउस की स्पीड को मिकी यूनिट में गिना जाता है। एक मिकी एक इंच का 200वां हिस्सा होता है।

-इसे इंग्लिश, स्पैनिश, इटालियन, जर्मन, फ्रेंच और रूसी सहित अनेक भाषाओं में माउस के नाम से ही जाना जाता है।

कौन थे डगलस एंजेलबर्ट

डगलस एंजेलबर्ट (डग) सिर्फ माउस के ही जन्मदाता नहीं, बल्कि ई-मेल, वर्ड प्रोसेसिंग और टेलिकॉन्फ्रेंसिंग पर भी शुरुआती काम किया था। उनका जन्म 30 जनवरी 1925 को ओरेगन के पास पोर्टलैंड में हुआ था। उनके पिता रेडियो मैकेनिक और मां गृहिणी थीं। उन्होंने इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की डिग्री लेने के बाद दूसरे विश्वयुद्ध में राडार टेक्नीशियन के रूप में काम किया। इसके बाद वे नासा की संस्था नाका में इलेक्ट्रिकल इंजीनियर के पद पर काम करने लगे। जल्द ही वह नौकरी छोड़कर डॉक्टरेट की उपाधि के लिए बर्कले स्थित कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय चले गए। बाद में उन्होंने ऑग्मेंटेशन शोध केन्द्र के नाम से अपनी प्रयोगशाला स्थापित की। उनकी प्रयोगशाला ने एआरपीएनेट के विकास में सहयोग किया, जिसने आगे चलकर इंटरनेट का रूप लिया। उन्हें 1997 में लेमेलसन-एमआईटी पुरस्कार मिला और साल 2000 में पर्सनल कम्प्यूटिंग की बुनियाद तैयार करने के लिए नेशनल मेडल फॉर टेक्नालॉजी से नवाजा गया।

नकचढ़ी, खूबसूरत और रंग-बिरंगी होती है पैराडाइज चिड़िया

दुनिया में चिड़ियों की हजारों प्रजातियां पाई जाती हैं। इन्हीं में से एक खूबसूरत प्रजाति है बर्ड्स ऑफ पैराडाइज। यह प्रजाति पृथ्वी पर 2 करोड़ 40 लाख साल पुरानी है। इन्हें इनके रंगों के लिए जाना जाता है। देखने में ये इतनी सुंदर होती हैं कि तुम इनसे नजर नहीं हटा पाओगे। देखने में छोटी सी रंग-बिरंगी ये चिड़िया पैराडाइसेडी परिवार से ताल्लुक रखती है और खासतौर से पापुआ न्यू गिनी, मोलक्कस और पूर्वी ऑस्ट्रेलिया में पाई जाती है। यह खुश रहने वाली चिड़िया थोड़ी नकचढ़ी भी होती है। बिल्कुल तुम्हारी तरह है ये। जब तुम्हारी मम्मी मनपसंद नाश्ता नहीं बनाती है तो तुम भी तो गुस्सा हो जाते हो, उसी तरह जब पैराडाइज को भी उसका पसंदीदा भोजन नहीं मिलता तो ये गुस्से में खाना नहीं खाती है। इन चिड़ियों की पहचान इनके रंग-बिरंगे पंखों से होती है। पीली, नीली, हरी, लाल धारियों वाली चिड़िया अगर दिखे तो समझ जाना कि ये पैराडाइज ही है। कहा जाता है कि इन चिड़ियों के रंग पिछले दो हजार सालों से ऐसे ही हैं और इनके रंग-रूप में इतने सालों में भी कोई बदलाव नहीं आया है। इस प्रजाति में पाए जाने वाले नर चिड़ियों के पंखों को स्ट्रीमर्स कहा जाता है, क्योंकि इनके पंख सख्त और रूखे होते हैं। जब ये चिड़िया खुश होती हैं तो नाचती-गाती हैं और अपनी आवाजों से बहुत सारी चिड़ियों को इकट्ठा कर लेती हैं। इनकी खूबसूरती के कारण ही दक्षिणी अफ्रीका के 'बनाना परिवार' से ताल्लुक रखने वाले रंग-बिरंगे फूल का नाम भी बर्ड ऑफ पैराडाइज रखा गया है।

कहां सबसे ज्यादा पैराडाइज

पता है, मलुक्का इंडोनेशिया में स्थित अरू महाद्वीप पर बर्ड ऑफ पैराडाइज की 39 अलग-अलग प्रकार की प्रजातियां पाई जाती हैं। मशहूर पक्षी वैज्ञानिक डॉ. टिम लेमन दुनिया के पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने सभी प्रजातियों की पैराडाइज की तस्वीरें ली हैं। कुछ तस्वीरें तो इतनी दुर्लभ हैं कि लोग उन्हें महंगे दामों पर भी खरीदने को तैयार रहते हैं।

खतरा भांपते ही भौंकती है प्रेयरी गिलहरी

बच्चों यदि आपसे पूछा जाए कि किसी ऐसे जानवर का नाम बताओ जो भौंकता है ?.. बहुत आसान सवाल है तुरंत ही आप जवाब दे देंगे- उस जानवर का नाम है कुत्ता। बिल्कुल ठीक कहा आपने कुत्ता भौंकता है, किन्तु क्या आप एक और ऐसे जानवर का नाम बता पाएंगे जो भौंकता है.. शायद नहीं। पर, क्या आपको पता है कि कुछ अन्य जानवर भी विशेष परिस्थितियों में भौंकते हुए पाए गए हैं। उत्तरी अमेरिका के प्रेयरी मैदानों में ऐसी गिलहरियां पाई जाती है जो खतरे का अंदेशा होते ही कुत्ते की तरह भौंकती है। कुत्ते के जैसी आवाज के कारण शुरूआत में इनकी पहचान प्रेयरी डॉग से की गई थी किन्तु बाद में पता चला ये यहां पाई जाने वाली गिलहरियां है जो कॉलोनी बनाकर रहती है। प्रेयरी गिलहरी यूं ही शौकिया नहीं भौंकती जब यह आसपास किसी खतरे को महसूस करती है तो भौंककर अपने साथियों को उसके लिए सतर्क करती है। जब कोई गिलहरी अचानक भौंकना शुरू करती है तो आसपास रह रही अन्य गिलहरियां अपने घरों में जा छिपती है। प्रेयरी गिलहरियां अपनी आवाज की पिच को ऊंचा-नीचा करके खतरे के प्रकार का संकेत भी दे देती है। खतरे के सिर पर मंडराने की अवस्था में ये बहुत तेज आवाज निकालती है जो बिल्कुल कुत्ते के भौंकने के जैसी होती है। खतरे के आसपास होने पर ये धीमी आवाज निकालती हैं और खतरे के टल जाने पर भी ये एक अलग तरह की आवाज करती देखी गई है। खतरा होने पर ये अपनी पूंछ को तेजी से पटकती है तथा पैरों के पंजों को थपथपाती है।

प्रेयरी गिलहरी को इसके वैज्ञानिक नाम स्यूरस ग्रीसियस से पहचाना जाता है। इसकी जंगली हरकतें देखते हुए इसे जंगली गिलहरी भी कहा जाता है। वैसे तो ये गिलहरियां बहुत कुछ सामान्य गिलहरियों की ही तरह होती है किन्तु इनकी पूंछ सामान्य गिलहरी की अपेक्षा लम्बाई में कुछ छोटी तथा झबरीली होती है जिसका अन्तिम सिरा काला होता है इसलिए इन्हें काली पूंछ वाली गिलहरी भी कहते है। ये गिलहरियां 18 से 24 इंच तक लंबी होती है और इनका वजन 350 से 950 ग्राम तक होता है।

प्रेयरी गिलहरी एक सामाजिक प्राणी है जो कॉलोनी में रहना पसंद करती है। एक बड़ी कॉलोनी में बने इसके घर को कोटरी के नाम से जाना जाता है। कोटरी के अंदर ही यह अपना घोंसला भी बनाती है। यह पेड़ों और जमीन पर समान रूप से रह पाती है। इसका प्रिय भोजन घास-फूस तथा वनस्पतियां हैं इसके अतिरिक्त यह बीज तथा फल-फूल भी खाती है। यह कई बीजों के कठोरतम आवरण को अपने कृन्तक दांतों से तोड़ कर निकाल पाती है। पेड़-पौधों से बीजों को इकट्ठा करते समय कुछ बीज खेतों में यहां वहां बिखेरने से प्लांटेशन में मदद मिलती है। मार्च से मई माह इसका प्रजनन काल होता है, यह साल में एक बार ही प्रजनन करती है, 43 दिनों तक बच्चे गर्भ में पलते हैं। यह एक बार में तीन से पांच बच्चों को जन्म देती है। जन्म के समय इसके बच्चों की आंखें व कान बंद होते हैं जो एक माह का होने पर खुलते हैं। 10 सप्ताह तक बच्चे बड़े हो जाते हैं और अपनी मां के साथ भोजन की तलाश में बाहर जाना शुरू कर देते हैं। प्रेयरी गिलहरी एक जगह ही रहना पसंद करती है किन्तु बहुत अधिक ठंड पड़ने पर बहुत कम समय के लिए गर्म स्थानों की ओर प्रवास पर जाती है। परभक्षी जानवरों से तो इसको खतरा रहता है किन्तु खेती चट कर जाने के डर से तथा इसके स्वादिष्ट मांस के कारण यह मनुष्यों द्वारा भी शिकार होती रही है जिसके कारण इसकी संख्या बहुत कम रह गई है, जरूरत है इसके संरक्षण की ताकि इस प्रजाति को विलुप्त होने से बचाया जा सके।

मानवीय क्षमता से परे सुनने की ताकत दे सकते हैं झींगुर

झींगुरों में पाए गए एक नए सुनने वाले अंग में मानवीय श्रव्य क्षमता से परे की आवाजें सुनने के गुण पाए गए हैं। शोधकर्ताओं का कहना है कि दक्षिणी अमेरिका के झींगुरों में पाया गया यह श्रवण अंग जैव-प्रेरित श्रव्य सेंसरों के लिए नए आयाम खोल सकता है। इन सेंसरों से मेडिकल इमेजिंग और श्रव्य मदद के विकास में भी मदद मिल सकती है। ब्रिस्टल विश्वविद्यालय और लिंकन विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने इस श्रवण अंग की क्षमता की खोज झींगुर के गैर पारंपरिक कानों में ऊर्जा रूपांतरण का अध्ययन करते हुए की। इस अध्ययन में पाया गया कि झींगुर के कान ठीक उसी तरह काम करते हैं जैसे कि अन्य स्तनधारियों के करते हैं। शोधकर्ता डॉक्टर फर्नेंडो मोंटिलेग्रे जेड ने कहा, ''हमने एक ऐसी नई संरचना की खोज की है जो इन कीटों में सुनने का मुख्य जरिया है। इसे पिछले अध्ययन में शामिल नहीं किया गया था। यह अंग द्रव्य से भरे एक फफोले की तरह है।'' उन्होंने कहा कि यह श्रवण अंग श्रव्य ऊर्जा को यांत्रिक, जलीय और विद्युत रासायनिक ऊर्जा में बदलने वाले मध्य कारक का काम करता है।

अजब-गजब घड़ियां!

घड़ी हमें टाइम बताती है। सोचो, अगर तुम्हारे घर में घड़ी ही न हो तो तुम क्या करोगे? कैसे पता चलेगा कि टाइम क्या हुआ है। पर क्या तुम जानते हो कि घड़ी सिर्फ टाइम बताने के ही काम नहीं आती, बल्कि लोरी गाने से लेकर झूठ पकड़ने का काम भी करती है। कैसे? चलो जानते हैं ...

आठ डायल वाली घड़ी

घड़ियां कई तरह की होती है। दीवार पर टांगने वाली, हाथ में बांधने वाली, अलार्म क्लॉक और शो बढ़ाती घड़ियां। ये सभी समय बताती हैं। इनमें मिनट और सेकंड की सुई भी होती है। एक छोटी सुई और एक बड़ी। लेकिन दुनिया में एक ऐसी घड़ी है, जो चारों ओर से दिखाई देती है। यह घड़ी अमेरिका में है। इस घड़ी में एक-दो नहीं बल्कि चार डायल है। अमेरिका में एलेन ब्रेडली कंपनी की इमारत पर यह घड़ी लगी हुई है। इस घड़ी के हर डायल का व्यास 12.28 मीटर है। इस घड़ी को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में भी शामिल किया गया है। इसे अक्टूबर 1962 में लगाया गया था।

छोटी घड़ियां

स्विट्जरलैंड की कंपनी है जैगर। इस कंपनी को छोटी से छोटी घड़ियां बनाने के लिए जाना जाता रहा है। कंपनी ने अब तक ऐसी कई घड़ियां बनाई हैं, जिनकी लंबाई लगभग 1.2 सेंटीमीटर, चौड़ाई 0.476 सेंटीमीटर और कुल वजन 6 ग्राम से भी कम है।

ब्लड प्रेशर बताती घड़ी

जापान में ऐसी घड़ी बनाई गई है, जिसे पहन कर कभी भी ब्लड प्रेशर देखा जा सकेगा। इसके लिए घड़ी पहनने वाले व्यक्ति को केवल डायल पर एक निर्धारित स्थान पर अपनी उंगलियां रखनी होंगी, घड़ी तुरंत ही ब्लड प्रेशर बताने लगेगी।

जनसंख्या बताने वाली घड़ी

घड़ी केवल समय ही नहीं बताती, यह भी बताती है कि हर पल जनसंख्या की स्थिति क्या है। जनसंख्या बताने वाली घड़ी अमेरिका के शिकागो में साइंस एंड इंडस्ट्रीज के संग्रहालय में लगी है। विश्व जनसंख्या का प्रतिदिन का हिसाब यही घड़ी रखती है।

गाने वाली घड़ी

ब्रिटेन के क्लॉक टॉवर की घड़ी है बिगबेन। यह भी चारों ओर से देखी जा सकती है और यह गाती भी है। हर एक घंटे के बाद यह घड़ी गाती है। इस घड़ी में आयरन फ्रेम लगे है। यह घड़ी लंदन शहर का प्रतीक मानी जाती है।

खुशबू बरसाने वाली घड़ी

घड़ियां समय बताएं यह तो समझ आता है, लेकिन खुशबू बरसाए यह बात जरूर अजीब लगती है। स्विट्जरलैंड में एक ऐसी भी घड़ी बनाई गई थी, जो बंदूक के आकार की थी और उसका घोड़ा दबाते ही वह इत्र की बौछार करती थी।